

टोपी

प्रश्न-1 गवरइया और गवरे की बहस के तर्कों को एकत्र करें और उन्हें संवाद के रूप में लिखें।

उत्तर गवरइया :- “आदमी को देखते हो? कैसे रंग - बिरंगे कपड़े पहनते हैं। कितना फबता है उन पर कपड़ा।”

गवरा :- “खाक फबता है। कपड़ा पहन लेने के बाद तो आदमी और बदसूरत लगने लगता है।”

गवरइया :- “लगता है आज लटजीरा चुग गए हो?”

गवरइया :- “कपड़े केवल अच्छा लगने के लिए नहीं मौसम की मार से बचने के लिए भी पहनता है आदमी।”

गवरा :- “तू समझती नहीं। कपड़े पहन - पहन कर जाड़ा-गरमी-बरसात सहने की उनकी सकत भी जाती रही है और कपड़ा पहनते ही पहनने वाले की औकात पता चल जाता है।”

गवरइया :- “फिर भी आदमी कपड़ा पहनने से बाज़ नहीं आता। नित नए - नए लिबास सिलवाता रहता है।”

गवरा :- “यह निरा पोंगापन है। अपन तो नंगे ही भले।”

गवरइया :- “उनके सिर पर टोपी कितनी अच्छी लगती है। मेरा भी मन टोपी पहनने का करता है।”

गवरा :- “टोपी तू पाएगी कहाँ से। टोपी तो आदमियों का राजा पहनता है। मेरी मान तो तू इस चक्कर में पड़ ही मत।